ECONSPEAK: A Journal of Advances in Management IT & Social Sciences,
Vol. 10, Issue 7, July 2020 Impact Factor 6.569 ISSN: (2231-4571)
www.skirec.org Email Id: skirec.org@gmail.com

हिंदी उपन्यास : एक सूक्ष्म दृष्टि

डॉ. प्रतिभा चौहान
सम्प्रति- सहायक प्रोफेसर (अध्यक्ष हिन्दी विभाग)
पंडित जवाहरलाल नेहरू पी.जी महाविद्यालय फरीदाबाद

उपन्यास का प्रारंभ भारतेंदु हरिश्चंद्र के समय से ही माना जाता है यद्यपि हिंदी गद्य साहित्य की नींव उनसे पूर्व ही पड़ चुकी थी तथापि साहित्य के विविध क्षेत्रों में भारतेंदु हरिश्चंद्र का अत्यधिक व्यापक प्रभाव देखने को मिलता है। उन्होंने हिंदी गद्य साहित्य का प्रवर्तन किया। उनके सद्प्रयासों से साहित्य को न केवल नवीन रूप प्राप्त हुआ वरन शिक्षित और सुसंस्कृत जनता के निकट भी साहित्य का आगमन हुआ। इस युग में जनता के विचार परंपरा व नई दिशाएं खोज रहे थे। यह राष्ट्रीय जागृति का काल था। इस काल में यूरोपीय उपन्यास का भी पर्याप्त विकास हो चुका था। इस युग के उपन्यासों पर विदेशी उपन्यासों के प्रभाव के साथ बंगला उपन्यासों का प्रभाव भी देखने को मिलता है।

उपन्यास की उत्पत्ति और उसका महत्त्व

मनुष्य के सामाजिक, वैयक्तिक अथवा दोनों प्रकार के जीवन का रोचक साहित्यिक प्रतिरूप उपन्यास है जो प्रायः दोनों प्रकार के जीवन को प्रभावित करते हुए कथासूत्र के आधार पर निर्मिति को प्राप्त होता है और आगे बढ़ता है।

सामाजिक एवं वैयक्तिक जीवन उपन्यास के मुख्य विषय हैं इसमें किसी एक को अथवा दोनों को उपन्यास का मुख्य आधार बनाया जा सकता है। व्यक्ति और समाज परस्पर अटूट बन्धनों से बँधे रहते हैं अतः साहित्य में भी इसको सम्बद्ध ही

रखना पड़ता है। उपन्यास में प्रतिपादित जीवन चाहे सामाजिक हो.. चाहे वैयक्तिक, वह सामान्य या विशेष विशाल या सीमित हो सकता है। जीवन के विविध अंगों का निरीक्षण कर उसका समग्र रूप उपस्थित करने वाले कतिपय बृहत्काय उपन्यास हमें विश्व साहित्य ने प्रदान किए हैं। लाला श्रीनिवास का - परीक्षा गुरु, प्रेमचंद कृत -गबन, विशंभरनाथ शर्मा 'कौशिक' का मां, भिखारिणी, जैनेंद्र कुमार कृत - परख आदि उपन्यास सामाजिक जीवन की समस्याओं का और व्यक्ति के विशेष मनोव्यापार का विश्लेषण करने वाले हैं।

उपन्यास की क्षेत्र विस्तृति

जीवन सदृश ही उपन्यास का क्षेत्र भी अतिविस्तृत है जैसे महाकाव्य जीवन के सभी अंगों का स्पर्श कर सकता है उसी प्रकार उपन्यास उससे भी बढ़कर जीवन का सर्वांगीण निरीक्षण करता है। पाश्चात्य विद्वान एच० फील्डिंग के अनुसार- "Novel is the study of Human Nature."[1] [उपन्यास मानव प्रकृति का अध्ययन है] । इस प्रकार उपन्यास को मानव प्रकृति का अध्ययन भी कहा गया है।

"प्रेमचन्द ने भी मानव चरित्र पर प्रकाश डालना और उसके रहस्यों को खोलना ही उपन्यास का मूल तत्व माना है"[2] ।वस्तुत: कह सकते हैं कि, उपन्यास एक ऐसी साहित्यिक विधा है जिसमें आकर्षक रूप में मनुष्य की वैविध्यपूर्ण प्रकृति, उसके बुद्धिवैभव और भाव समृद्धि का अध्ययन प्रस्तुत किया जाता है। वाल्टर बेसेंट कहते है कि, - "उपन्यास के विषय का विस्तार चरित्र से किसी कदर कम नहीं है उसका सम्बन्ध अपने । चरित्रों के कर्म और विचार उनके देवत्व और

[1] सन्दर्भ सूची

फील्डिंग एच०. टॉम जोन्स. 1749. ए मिलर, लन्दन (प्राक्कथन)

[2] प्रेमचन्द कुछ विचार, विशिष्ट सं०. 1982, सरस्वती प्रेस इलाहाबाद, पृष्ठ 47

पशुत्व, उनके उत्कर्ष और अपकर्ष से हैं। मनोभाव के विभिन्न रूप और भिन्न-भिन्न दशाओं में उनका विकास उपन्यास के मुख्य: विषय है"[3] । अतः विषय विस्तार ने उपन्यास को संसार साहित्य का प्रधान अंग बना दिया है।

उपन्यास शब्द की उत्पत्ति

उपन्यास शब्द की उत्पत्ति 'उप' तथा 'न्यास' के योग से हुई है जिसका अर्थ क्रमशः समीप तथा वस्तु होता है। इस दृष्टि से उपन्यास ऐसी कथावस्तु को कहते हैं जो व्यक्ति के जीवन के समीप होती है। उपन्यास शब्द लैटिन भाषा के मूल रूप 'नावेला' तथा 'नावेलस से विकसित हुआ है। फ्रेंच भाषा के 'नावेले' तथा 'नोवस' शब्द भी इसी मूल रूप से विकसित हुए हैं।

उपन्यास की परिभाषा एवं स्वरूप

हिन्दी गद्य साहित्य में उपन्यास विधा का इतिहास अन्य भारतीय भाषाओं में लिखे गये उपन्यासों के सदृश ही नवीन एवं महत्त्वपूर्ण है। हिन्दीजगत में उपन्यास विधा का प्रारम्भ भारतेन्दु काल से माना जाता है। तत्कालीन लेखकों ने उपन्यास की रचना की प्रेरणा बंगला और अंग्रेजी भाषा के उपन्यासों से प्राप्त की। अंग्रेजी साहित्य ढंग का पहला मौलिक उपन्यास लाला श्रीनिवासदास कृत परीक्षागुरू (1882) माना जाता है। यह एक सामाजिक एवं मनोरंजनपरक उपन्यास है। भारतीय तथा पाश्चात्य विद्वानों ने उपन्यास की परिभाषा अनेक प्रकार से दी है।

अर्नेस्ट ए० बेकर के अनुसार- "उपन्यास गद्य में लिखी एक कल्पना जनित कथा है, जिसके माध्यम से लेखक जीवन की व्याख्या करने का प्रयत्न करता है"[4] ।

[3] प्रेमचन्द कुछ विचार, विशिष्ट सं०. 1982, सरस्वती प्रेस इलाहाबाद, पृष्ठ 61

[4] टंडन, डॉ० प्रतापनारायण, प्रेमचन्द, 1969 सामयिक प्रकाशन, दरियागंज दिल्ली-6, पृष्ठ 78

अतः उपन्यास विधा द्वारा लेखक मनुष्य के जीवन के हर पहलू की व्याख्या करने में सफल होते हैं।

दि न्यू पिक्चर्ड एन्साइक्लोपीडिया में लिखा है- "उपन्यास दीर्घ आकार गद्य में रचित ऐसी कल्पनात्मक कथा रचना को कहते है जो जीवन के यथार्थ रूप की परिचायक हो"[5]। इस प्रकार उपन्यास विधा मानव जीवन के यथार्थ रूप को स्पष्ट करती है।

फ्रांसीसी विद्वान बेकन ने "उपन्यास को एक प्रकार का कल्पित इतिहास बताया है"[6] । अतः उपन्यास विधा को हम कल्पनात्मक इतिहास भी कह सकते हैं उपर्युक्त पाश्चात्य मतों के अतिरिक्त संस्कृत एवं हिन्दी आचार्यों ने भी कहा कि "उपन्यास एक महत्त्वपूर्ण एवं प्रिय साहित्यिक विधा है"।

डॉ० त्रिभुवन सिंह के अनुसार- "साहित्य क्षेत्र में उपन्यास ही एक ऐसा उपकरण है जिसके द्वारा सामूहिक जीवन अपनी समस्त भावनाओं एवं बिन्ताओं के साथ सम्पूर्ण रूप में अभिव्यक्त हो सकता है"[7] ।

डॉ० विनय मोहन शर्मा के शब्दों में- "कथा जब जीवन के एक अंग तक सीमित रहती है तब वह कहानी और जब उसके व्यापक भाग को घेर लेती है तो उपन्यास कहलाती है"[8] ।

डॉ० सत्येन्द्र कहते हैं- "उपन्यास नये युग की नयी अभिव्यक्ति का नया रूप है। अतः उपन्यास नये युग की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम भी है"[9] ।

[5] टंडन, डॉ० प्रतापनारायण, प्रेमचन्द, 1969 सामयिक प्रकाशन, दरियागंज दिल्ली-6, पृष्ठ 78
[6] टंडन, डॉ० प्रतापनारायण, प्रेमचन्द, 1969 सामयिक प्रकाशन, दरियागंज दिल्ली-6, पृष्ठ 78
[7] दास, जयकिशन, हिन्दी साहित्य की प्रवृत्तियाँ 1981, विनोद पुस्तक आगरा, पृष्ठ 540
[8] शर्मा विनय मोहन हिन्दी उपन्यास स्थिति और गति, पृष्ठ 45

उपन्यास का अन्य विषयों से सम्बन्ध

वर्तमान में उपन्यासों का स्वरूप आधुनिक युग की देन है। उपन्यास विधा का विकास भी आधुनिक युग में उल्लेखनीय रूप में हुआ है। साहित्य की अनेक विधाओं से भी उसका सम्बन्ध है। समानता की दृष्टि से वह लघु उपन्यास से सबसे निकट है। कथानक, देशकाल, पात्र, कथोपकथन, भाषा-शैली, वातावरण तथा उद्देश्य आदि मूलतत्त्व इन दोनों में समान होते हैं। उपन्यास और कहानी में तत्त्व की दृष्टि से समानता होती है।

उपन्यास और संस्मरण में कथात्मक एकरूपता होती है। इनमें आत्मा की अनुभूति की अभिव्यक्ति ही प्रधान होती है। उपन्यासों और महाकाव्य में परिवेशगत विस्तार की दृष्टि से समानता पायी जाती है। उपन्यास और नाटक में शास्त्रीय दृष्टि से सबसे बड़ा अन्तर यह है कि उपन्यास श्रव्यकाव्य होता है व्यक्ति उसे सुन सकता है और नाटक दृश्यकाव्य के अन्तर्गत आता है जिसे मंच पर नाटकीय रूप में देखा जा सकता है।

उपन्यास और मनोविज्ञान का भी बहुत गहरा सम्बन्ध होता है ऐतिहासिक उपन्यासों की पृथक कोटि की भाँति मनोवैज्ञानिक उपन्यास की अलग और महत्त्वपूर्ण कोटि है। मनोवैज्ञानिक उपन्यासों का वर्तमान समय में पर्याप्त विकास हुआ है। उपन्यास और नीति का भी बहुत गहरा सम्बन्ध है प्राचीन काल का अधिकतर कथा साहित्य नीति प्रधान रहा है। अतः साहित्य की अनेक महत्त्वपूर्ण विधाओं एवं विषयों से उपन्यास का बहुत गहरा सम्बन्ध है। जो व्यक्ति के जीवन व परिस्थितियों को प्रभावित करता है। और सदैव एक नयी दिशा देता है।

[9] टंडन. डॉ० प्रतापनारायण, प्रेमचन्द 1969 सामयिक प्रकाशन दरियागंज, दिल्ली-6, पृष्ठ 78